www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परिष्कृत काम तत्व, हेय नहीं अभिनन्दनीय

- श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिष्कृत काम-तत्व, हेय नहीं अभिनन्दनीय

इस समस्त विश्व में शक्ति का अनन्त सागर लहलहा रहा है। ब्रह्मा की दो पत्नियाँ होने की चर्चा पुराणों में आती है। एक का नाम सावित्री दूसरी का गायत्री है। एक को परा प्रकृति दूसरी को अपरा प्रकृति कहते है। दूसरे शब्दों में इन्हें जड़ और चेतन सृष्टि कह सकते हैं। जड़-शक्ति वह है जो अणु शक्ति के पीछे काम करने वाली प्रेरक सत्ता से आरम्भ होती है। नाभिक न्यूक्लियस के अन्तराल में भरी हुई अगणित और अद्भुत गति-विधियों और दिशा विदिशाओं के रूप में जिसका परिचय प्राप्त किया जाता है। भौतिक जगत इसी का पसारा है। इन्द्रियों से जिनका स्वरूप देखा समझा जाता है एवं इन्द्रियातीत वे शक्तियाँ जिनको उपकरणों से पकड़ा जा सकता है वे सभी दृश्य अदृश्य शक्तियाँ भी हलचल से शून्य नहीं है। पर उनमें चिन्तन क्षमता न होने से जड़ कहते हैं। जड़ प्रकृति का अर्थ गतिहीन नहीं। शक्ति में गति न हो तो फिर वह शक्ति कैसी। बोलचाल की भाषा में उसे जड़-दार्शनिक चर्चा में उसे परा-पौराणिक अलंकारों में उसे सावित्री कहते हैं। जितना कुछ यह जगत देखा समझा जा सकता है उसे सावित्री कहना चाहिए। जो कुछ विचार की, भावना की, उत्साह की शक्ति है उसे गायत्री कहते हैं। पुराणों का उपरोक्त अलंकारिक उपाख्यान—यही प्रतिपादित करता है कि ब्रह्म-परमेश्वर अपनी परा और अपरा प्रकृति के जड़ और चेतन विभूतियों के माध्यम से समस्त सृष्टि का उद्भव, पोषण और प्रत्यावर्तन करता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य इन परा और अपरा प्रकृतियों का सजीव सम्मिश्रण है। शरीर पंच तत्वों का बना होने से जड़ है। आत्मा विचारशील और भाव सम्पन्न होने से चेतन है। जड़ और चेतन का यह संयोग ही मनुष्यकी अद्भुत प्रतिभा का स्रोत है, जिन निम्न वर्ग वाले जीव-जन्तुओं का चेतन जितना निर्बल है वे उतने ही पिछड़े हुए हैं। हम इसीलिये अगणित सम्पदाओं और विभूतियों के अधिपति बन सके कि इस काया में उत्कृष्ट स्तर की परा और अपरा प्रकृति को कर्ता ने भली प्रकार नियोजित कर दिया है।

काया में दो केन्द्र इन दोनों शक्तियों के हैं। सावित्री—जड़परा प्रकृति का केन्द्र है। मूलाधार चक्र यहाँ कुण्डलिनी महाशक्ति अत्यन्त प्रचण्ड स्तर की क्षमताऐं दबाये बैठी है। पुराणों में इसे महाकाली के नाम से पुकारा गया है। मोटे शब्दों में इसे काम—शक्ति कह सकते हैं। काम—शक्ति का अनुपयोग, दुरुपयोग किस प्रकार मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है उसे आध्यात्मिक काम विज्ञान कहना चाहिए। इस शक्तिका बहुत सूझ-बूझ के साथ प्रयोग किया जाना चाहिए,यही ब्रह्मचर्य का तत्व ज्ञान हैं। बिजली की शक्ति से अगणित प्रयोजन पूरे किये जाते हैं और लाभ उठाये जाते हैं पर यह होता तभी है जब उसका ठीक तरह प्रयोग करना आये, अन्यथा चूक करने वाले के लिये तो वही बिजली प्राणघातक सिद्ध होती है।

काम-शक्ति को गोपनीय तो माना गया है, जिस प्रकार धन कितना है, कहाँ है, आदि बातों को आमतौर से लोग गोपनीय रखते हैं। उसकी अनावश्यक चर्चा करने से अहित होने की आशंका रहती है। इसी प्रकार काम-तत्व को गोपनीय ही रखा गया है। पर इसकी महत्ता, सत्ता और पवित्रता से कभी किसी ने इनकार नहीं किया। यह घृणित नहीं, पवित्र तम है। यह हेय नहीं अभिवंदनीय है। भारतीय अध्यात्म शस्त्र के अन्तर्गत शिव और शक्ति का प्रत्यक्ष समन्वय जिस पूजा प्रतीक में प्रस्तुत किया गया है उसमें इस रहस्य का सहज ही उद्घाटन हो जाता है। शिव को पुरुष की जनेन्द्रिय और पार्वती को नारी की जनेन्द्रिय का स्वरूप दिया गया है। उनका सम्मिलित विग्रह ही अपने देव मन्दिरों में स्थापित है। यह अश्लील

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं है। तत्वतः यह सृष्टि में संचरण और उल्लास उत्पन्न करने वाले प्राण और रयि, अग्नि और सोम के संयोग से उत्पन्न होने वाले महानतम शक्ति प्रवाह की ओर संकेत है। इस तत्व-ज्ञान को समझना न तो अश्लील है और न घृणित वरन् शक्ति के सद्भाव विकास एवं विनियोग का उच्चस्तरीय वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारभूत एक दिव्य संकेत है। यदि ऐसा न होता अपने त्रिकालदर्शी और ईश्वर समकक्ष स्तर पर पहुंच हुए तपपूत ग्रन्थि—भगवान शिव और उनकी स्फुरण शक्ति का समन्वय मन्दिरों में स्थापित न करते। हेय तो हर वस्तु का दुरुपयोग ही होता है। अमृत भी दुरुपयोग से विष बन सकता है। काम-शक्ति स्वयं घृणित नहीं। घृणित तो वह विडम्बना है जिसके द्वारा इतनी बहुमूल्य ज्योति धारा को शरीर को जर्जर और मन को अधःपतित करने के लिए अविवेकपूर्वक प्रयुक्त किया जाता है। सावित्री का—कुण्डलनी का प्राण—काम—पतित कैसे हो सकता है। वह तो देवता की पंक्ति में अति सम्मानपूर्वक विराजमान होता रहा है। जो जितना उत्कृष्ट है विकृत होने पर वह उतना ही निकृष्ट बन जाता है और एक तथ्य है।

ब्रह्म की दूसरी पत्नी-शक्ति-गायत्री—जिसे विचारणा एवं भावना कहते हैं अपने स्थान पर अति महत्वपूर्ण है। माननीय चिन्तन का उचित निर्देशन उसी के द्वारा होता है। ऋतम्भरा प्रज्ञा ही नर-पशु को नर-नारायण बनाता है। समस्त धर्म-शास्त्र, तत्व-ज्ञान, स्वाध्याय, सत्संग, मनन-चिन्तन, इसी की क्षेत्र परिधि में आता है। उसके प्रकाश विस्तार पर कोई प्रतिबन्ध न होने से अतीत से लेकर अद्यावधि पर्यन्त बहुत कुछ कहा सुना जाता रहा है 'अखण्ड ज्योति' में भी उसी की चर्चा रहती रही है। चर्चा जिसकी नहीं वह सावित्री ही थीं। कुण्डलिनी शक्ति की गोपनीयता का उद्घाटन करने से कतराने की ही परम्परा चली आई है। गोपनीयता की मर्यादा जहाँ तक रही वहाँ तक उसे तन्त्र विद्या के माध्यम से किसी न किसी रूप में कहा जाता रहा। पर जब दुरुपयोग का विग्रह—उग्र से उग्रतर होने लगा और बात अश्लीलता तक पहुंच गई। उसके प्रयोक्ता आसुरी दुष्टता को अपनाने लगे तो उसकी चर्चा और भी अधिक अस्पर्श हो गई। तन्त्रकाल जब तक रहा तब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तक स्नायु मण्डल में थिरकती हुई इस महाकाली की विवेचना और साधना सम्मानित बनी रही।। दश-महाविद्याऐं जिनकी साधना से भौतिक जीवन में ऋद्धि-सिद्धियों का अद्भुत संचरण होता है तन्त्र विज्ञान की आधार स्तम्भ है। इन दश देवियों का पूजा प्रकरण हमने अपने तन्त्र-विज्ञान ग्रन्थ में लिखा भी है, पर गहन क्षेत्र में प्रवेश करने पर स्पष्ट हो जाता है कि वस्तुस्थिति पूजा-उपासना तक सीमित नहीं। उन्हें जीवन को ज्योतिमयी शक्तिपीठ ही कहना चाहिए। दस विद्याऐं मात्र पूजा साधना में प्रयुक्त होने वाली देवियाँ नहीं है। वरन् मानवीय चेतना की समस्त क्रिया-प्रक्रियाओं में व्याप्त शक्ति निर्झरणी है जिनमें स्नान अवगाहन करने पर मनुष्य सामान्य न रहकर असामान्य बनता है और तुच्छता का कलेवर उतार कर महानता की भूमिका में प्रवेश करता हैं।

समय आ गया कि काम-विद्या के तत्व-ज्ञान का संयत और विज्ञान सम्मत प्रतिपादन करने का साहस किया जाय और संकोच का यह पर्दा उठा दिया जाय कि इस महान् विद्या की विवेचना हर स्तर पर अश्लील ही मानी जायगी—उसे हर स्थिति में गोपनीय ही रखा जाना चाहिए। यह संकोच मानव जाति को एक महान् लाभ से वंचित ही रखे रहेगा। चर्चा करने वाले को लोग हलके स्तर का समझेंगे। उसकी गरिमा घटेगी यह अपराध ही है। शरीर शक्ति का शिक्षण करने वाले उपाध्याय जननेन्द्रियों का स्वरूप समझाने में झिझक कर अपने छात्रों को उस महत्वपूर्ण ज्ञान से वंचित नहीं करते। यदि यह संकोचशीलता न तोड़ी जाती तो यौन रोगों के चिकित्सक कहां से आते? प्रसव सहायता और गर्भाशयों की शल्य-क्रिया कैसे सम्भव होती? संकोच वहां उचित है जहाँ कुत्साऐं भड़कने की आशंका हो। प्रतिबन्ध पशुता भड़काने वाली अश्लीलता, कामुकता, वासना की आत्मघाती प्रवृत्ति के प्रसारण पर होना चाहिए। सृष्टि की संचरण प्रक्रिया और मानव-जीवन की अतिशय महत्वपूर्ण एवं प्रेरक प्रवृत्ति की दिशा-विदिशा जानने से वंचित रहना, वस्तुतः अपने ही पैरों कुल्हाड़ी मारना है। उचित ज्ञान के अभाव में ही प्रक्षिप्त ज्ञान को विस्तार मिलता है। काम-वासना मनुष्य जीवन की एक अति प्रबल प्रवृत्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। उसकी हलचल मस्तिष्क को उद्वेलित करती ही रहती है। फलतः व्यक्ति उस सम्बन्ध में कुछ न कुछ कहने-सुनने के पूछने-बताने के—पढ़ने-जानने के लिए भी खोजबीन करता रहता है। उच्चस्तरीय जानकारी न होने से उसे घटिया, विकृत और अवांछनीय सामग्री हाथ लगती है। जिससे आत्मघात करने का ही पथ प्रशस्त होता है। इस स्थिति से बचने की दृष्टि से भी यह आवश्यक है कि काम प्रवृत्तिकी तथ्यपूर्ण जानकारी सर्वसाधारणको उपलब्ध रहे और उसके आधार पर उसे अपने व्यक्तित्व विकास एवं सन्तुलन में सहायता मिलती रह सके।

आध्यात्मिक काम-विज्ञान का प्रथम पाठ आज की स्थिति में भारतीयों को यह पढ़ना चाहिए कि ये प्रकृति और पुरुष की समीपता एवं एकता को तात्विक दृष्टि से देखें और उसका समन्वय वैसे ही करें जैसे कि एक ही शरीर में रहने वाले इन दो तत्वों का सहज भाव से बना चला आता है मस्तिष्क प्राण का—अग्नि का—ब्रह्म का प्रतीक है। मूलाधार काम संस्थान—रयि का—सोम का प्रतीक है। दोनों एक ही शरीर में घुले-मिले-पास-पास रहते हैं। दोनों की सह स्थिति कोई उपद्रव उत्पन्न नहीं करती वरन् एककी अपूर्णता को पूर्णता में विकसित करती है। दो प्रथक अङ्गों की सीमा में विकसित होकर यही प्रक्रिया एक से दो में और दो से बहुत में विकसित होती है। नर और नारियां दोनों ही मनुष्य हैं और दोनों के अस्तित्व में प्रत्यक्षतः कोई बड़ा अन्तर नहीं है। दोनों की योग्यता मर्यादा और क्षमता लगभग एक ही माननी चाहिए। पर यदि सूक्ष्मता की गहराई में जाया जाय तो उनकी मूल प्रकृति में पाया जायगा—नर जहाँ प्राण का—पौरुष का अग्नि का बाहुल्य रख रहा होगा वहाँ नारी सोम की—सौजन्य की भावना का प्रतिनिधित्व कर रही होगी। दोनों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं और उनका महत्व समान रूप से मूल्यवान है। दोनों एक दूसरे के विरोधी नहीं पूरक हैं। इसलिए उन्हें परस्पर अछूत की तरह नहीं रहना चाहिए। पिछले दिनों सामन्तवादी युग में नारी का बहुत ही दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण चित्रण कर दिया गया। उसे स्वर्ग की देवी के उच्च स्थान से घसीट कर वैश्या जैसे नारकीय स्तर की निर्मित किया गया। कामिनी और रमणी भाव उसे रहने दिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गया। कला के नाम पर केवल घृणित वासना की प्रतिमूर्ति नारी को सँजोया गया। गीत, काव्य, चित्र, मूर्ति, अभिनय, नृत्य, साहित्य आदि कलाके जितने भी स्वर थे सब ने मिलकर नारी को यौन लिप्सा की पूर्ति में प्रयुक्त होने वाली भोग सामिग्री के रूपमें प्रतिपादित किया। मस्तिष्क उसी सांचेमें ढलते चले गए। और नारी का वेषविन्यास ऐसा अभ्यस्त करा दिया गया जिससे वासना भड़काना ही उसका एकमात्र लक्ष्य दीखने लगे। नारी की जिस कुरुचि पूर्ण साज-सज्जा में अलकृत आज सर्वत्र देखा जाता है उसके पीछे सामन्तवादी युग की बनी दुरभिसन्धि काम कर रही है। यों तत्वतः नारी का यह घोर अपमान है कि वह नर की वासना भड़काने वाली साज-सज्जाको स्वीकर करले।

नारी का जो स्वाभाविक स्थान है वह उसे मिलना ही चाहिए। समाज में उसे पुरुष का पूरक बनकर रहना चाहिए, नारी की अछूत अस्पर्श की स्थिति जो इन दिनों बनी हुई है उसका एकमात्र कारण वह रुग्ण मनोवृत्ति है जिसके अनुसार नारी का अस्तित्व काम-सेवन भर मान लिया गया है। यदि उसे बहिन, बेटी, मां, सखा और पूरक मान लिया जाय, तो जिस प्रकार दो पुरुषों के सान्निध्यसे काम-प्रवृत्ति भड़कने का कोई डर नहीं रहता उसी प्रकार नर-नारी के बीच भी अकारण कलुष कषाय उत्पन्न न हो। वासना या विकार के लिए न नर का अस्तित्व दोषी है न नारी का। केवल मनोवृत्ति दोषी है जो अवांछनीय तत्वों में मौजूद भ्रम-जंजाल के रूप में कागज के रावण की तरह बनाकर खड़ी कर दी गई।

सर्वसाधारण को यह समझाया जाना चाहिए कि नारी न भोग्या है न रमणी न कामिनी। यह भी मनुष्य ही है, अगणित विभूतियों की धनी है। नर की पूरक है। दोनों हिलमिल कर सहयोगी सहचर की तरह रहें यही स्वाभाविक, उचित और न्यायसंगत है। प्रतिबन्धों के पीछे जिस व्यभिचार पर नियन्त्रण की बात सोची जाती है, वह सर्वथा निरर्थक है। व्यभिचार मात्र क्रिया नहीं हैं वस्तुतः वह दूषित दृष्टि ही है, जिसमें दृष्टि दोष भरा पड़ा है वह अविवाहित भी व्यभिचार का दण्ड भुगतेगा और जिसकी भावनायें पवित्र हैं वह विवाहित रहते हुए भी ब्रह्मचारी हैं। हमें इसी प्रवृत्ति का विकास करना चाहिए और रमणी कामिनी की भाषा में सोचना बन्द कर देना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कला के नाम पर जिन दुष्ट दुरात्माओं ने नारी को वैश्या का स्थान देने की ठान ठानी है, उन्हें अपराधियों की पंक्ति में खड़ा करना चाहिए। परस्पर पूरक रहकर सहयोग और सद्भाव की—नेह और सौजन्य की—भावनाओं का विकास करते हुए ही हम अवांछनीय एवं स्वाभाविक स्थिति का समाज विनिर्मित कर सकते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से तो यह यह नितांत आवश्यक है। प्राण और रयि की समीपता के बिना आंतरिक उल्लास का उद्भव ही न हो सकेगा। मानाकि बिना पत्नी के सरसता, बहिन के बिना सौहार्द्र, पुत्री के बिना स्नेह की धाराऐं सूखी ही पड़ी रहेंगी और नारी को अछूत मानने वाला नर मरघट में रहने वाले प्रेत-पिशाच की तरह एकाकीपन की आग में जलता रहेगा। इसी प्रकार प्रतिबन्धित नारी भी मणि-विहीन सर्प की तरह खोई-खोई भूली-भटकी सी अशांत और उद्विग्न बनी रहेगी। इस अवांछनीय स्थिति को जिस गर्हित काम-विज्ञान ने उत्पन्न किया है उसे बहिष्कृत, परिष्कृत करना ही होगा। अन्यथा ब्रह्म भी प्रकृति के सान्निध्य की तरह नर-नारी का स्नेह सद्भाव बढ़ने से सृष्टि का मानव-समाज का—सौन्दर्य और प्रकाश बढ़ेगा ही घटेगा नहीं।

यौन सम्पर्क एक विशेष प्रक्रिया है। उसके पीछे अग्नि और सोम के मिलन से उत्पन्न एक विद्युत संचार की विशेष प्रक्रिया सन्निहित हैं इसलिए उसकी उपयुक्तता और पवित्रता पर अधिकतम ध्यान रखा जा सकता है। पर वह प्रयोजन अनावश्यक प्रतिबन्धों से न हो सकेगा। यह प्रतिबन्ध तो उस दुष्ट मान्यता को ही बल देंगे जिसके अनुसार व्यभिचार के अतिरिक्त और किसी प्रयोजन के लिए नर-नारी चर्चा ही नहीं कर सकते। वर्तमान प्रतिबंधों की अवांछनीयता समझी जानी चाहिए और उन्हें इस दृष्टि से शिथिल एवं समाप्त किया जाना चाहिए कि नर और नारी स्वेच्छा से सद्भाव की महत्ता स्वीकार करें और सौजन्य के साथ रह सकें और प्रगति की दिशा में एक दूसरे के पूरक बनकर साहसपूर्ण कदम बढ़ा सकें। ★

क्र०८६/ प्र०-युग निर्माण योजना, मु०-युग निर्माण प्रेस मथुरा। मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org